(2)

तीछन ईछन बान बखान सो पैनी दसान लै सान चढ़ावत।
प्राननि प्यासे, भरे अति पानिप, मायल घायल चोप बढ़ावत।
यौं घनआनंद छावत भावत जान-सजीवन ओर तें आवत।
लोग हैं लागि कवित बनावत मोहिं तो मेरे कवित्त बनावत।।

शब्दार्थ- **तीछन**= तीक्ष्ण। **ईछन**= नेत्र। **बखान**= कहे जाते हैं। **पैनी**= तीव्र। **पानिप**= पानी, आन। **मायल**= प्रवृत। **चोंप बढ़ावत**= उत्साह भरते हैं। **ओर तें**= उनके पास से। **लोग**= और लोग (रीतिबद्ध रचना करने वाले)।

सन्दर्भ- प्रस्तुत छन्द में घनानन्द अपनी कविता की रीति-बद्ध कवियों की कविता से पृथकता बतला रहे हैं।

व्याख्या- मेरे कवित्त प्रिय के तीक्ष्ण कटाक्ष वाणों के समान हैं। ये मेरी प्रेम की दशाओं पर और शान चढ़ा देते हैं। मेरे प्रेमोंदगारों में वेग आ जाता है। ये कवित्त प्राणों से प्रिय लगते हैं। ये बड़ी आभा और पानी से भरे हुए हैं। ये मुझे घायल और आहत को उत्साहित करते हैं। ये प्यारे सुजान की ओर से स्वयं आ जाते हैं। रीतिबद्ध रचना करने वाले तो कविता के बनाने में लगे रहते हैं। उनकी कविता प्रयत्नसाध्य होती हैं, पर मुझे तो मेरे कवित्त ही निर्मित किया करते हैं। मेरी रचना के द्वारा ही मेरा प्रकृत रूप उत्तरोत्तर विकसित होता चलता है।

(3)

अति सूधो सनेह को मारग है जहँ नेकु सयानप बाँक नहीं।
तहाँ साँचे चलैं तजि आपनपौ झझकैं कपटी जे निसाँक नहीं।
घन आनंद प्यारे सुजान सुनौ यहाँ एक ते दूसरो आँक नहीं।
तुम कौन धौं पाटी पढ़े हो लला मन लेहु, पै देहु, छटाँक नहीं।।

शब्दार्थ- **सूधो**= सरल, सीधा। **सनेह**= स्नेह, प्रेम। **सयानप**= चतुराई, चालाकी। **नेकु**= तनिक भी। **बाँक**= टेढ़ापन, कुटिलता। **साँचे**= सच्चे प्रेमी। **तजि**= छोड़कर। **आपनपौ**= अहंकार, आत्मस्वरूप। **झझकै**= हिचकते हैं। **निसांक नहीं**= जो शंकाशील तथा सन्देहग्रस्त हैं। **दूसरों आँक नहीं**= हमारे हृदय में एक अतिरिक्त दूसरा अंक, दूसरा चिन्ह, दूसरी छाप ही नहीं है, केवल तुम्हारी छाप मेरे मन पर है। **कौन धौं**= कौन-सी। **पाटी पढ़े हो**= पट्टी पढ़ी हैं, शिक्षा प्राप्त की है। **मन**= हृदय। **मन की तौल**= सेर। **छटाँक**= छटाँक की तोल, सेर का सोलहवाँ, मन का 640 वाँ भाग, अत्यअल्प छठा अंक अर्थात् शोभा की झलक, अथवा उनट कर- कटाँछ, अर्थात् कटाक्ष।

सन्दर्भ- इस छन्द में घनआनन्द जी ने प्रेम-मार्ग की ऋजुता और इस मार्ग के पथिकों की निश्छलता पर बल दिया है।

केन्द्रीय-भाव- प्रेमी के प्रेम के सरल-सीधे मार्ग में प्रिय की कुटिलता तथा कपट, चतुराई का उलाहना देता हुआ कहता है कि मेरे मन में तो तुम्हारे प्रति एकनिष्ठता और अनन्यता है और तुम प्रतिदिन अपनी शोभा की झलक नहीं दिखाते।

व्याख्या- हे प्राण प्रियतम सुजान ! यह बात तो सर्वविदित है कि प्रेम का मार्ग अत्यन्त सीधा और सरल होता है, इसमें अल्प भी कुटिलता और चतुराई नहीं होती है। प्रेम के इस सरल-सीधे मार्ग पर हर कोई नहीं चल सकता है। इस पर अहंभाव को त्यागकर वास्तविक प्रेम ही चल सकता है और जो शंकाशील हैं, अथवा हृदय में कपट रखने वाले हैं, तथा वे प्रेम के इस सरल और सीधे मार्ग पर चलने में हिचकते हैं। हे घनआनन्द देने वाले सुजान ! सुनो, मेरे हृदय में एक के अतिरिक्त दूसरी छाप नहीं है, अर्थात् मेरे हृदय में केवल तुम्हारे प्रति अनन्य निष्ठा है। तुम्हारे अतिरिक्त अन्य किसी के प्रति मेरा प्रेम नहीं है, परन्तु तुम कौन-सी पट्टी पढ़े हो, अर्थात् तुम्हें कौन-सी शिक्षा मिली है कि मन भर लेकर छटाँक भी नहीं देते, अर्थात् मेरा मन चुराकर अपने सौन्दर्य की झलक तक नहीं दिखाते। तुमने मेरा मन तो ले लिया, परन्तु कटाक्ष तक नहीं देते हो।

विशेष- यहाँ प्रेमी के हृदय की दबी हुई आकुलता का तीखा स्वर मुखर हो उठा है।

घनआनन्द जी ने स्पष्ट किया है कि प्रेम-मार्ग अत्यन्त सीधा और सरल है। वह हृदय का निःश्छल व्यापार है। प्रेम का मार्ग केवल निश्छल प्रेममियों के लिये है। कपटी इस मार्ग पर नहीं चल सकता। घनआनन्द भुक्त-भोगी थे। वे इस मार्ग पर ही चले थे।

(4)

झलकै अति सुन्दर आनन गौर, छके दृग राजत काननि छ्वै।
हँसि बोलनि मैं छबि-फूलन की बरषा, उर-ऊपर जाति है ह्वै।
लट लोल कपोल कलोल करै, कलकंठ बनी जलजावलि ह्वै।
अंग अंग तरंग उठै दुति की, परिहै मनो रूप अबै धर च्वै।।

शब्दार्थ- झलकै= झलकता है, दमकता है। **आनन=** मुख। **गौर=** गोरे रंग का। **छके दृग=** मस्ती से भरे नेत्र। **राजत=** शोभा देते हैं। **कानन छ्वै=** कानों को छूकर, कानों तक फैले हुए। **हँसि बोलनि=** हँसकर बोलने में। **छबि फूलन=** शोभा के पुष्प। **उर-ऊपर=** हृदय के ऊपर। **जाति है ह्वै=** हो जाती है। **लोल=** चंचल। **कपोल=** गालों पर। **कलोल=** क्रीड़ा। **जलजावलि ह्वै=** मोतियों की माला। **तरंग=** लहर। **छवि=** शोभा। **धर=** पृथ्वी पर। **च्वै=** चू पड़ेगा।

सन्दर्भ- इस सवैया में घनानन्द जी प्रिय सुजान के अतुल सौन्दर्य का वर्णन कर रहे हैं। उसके अंग-प्रत्यंग से शोभा की तरंग उठती है और उसकी छवि पृथ्वी के ऊपर चूती सी लगती है।

व्याख्या- प्यारी सुजान का गोर वर्ण का मुख दमक रहा है और उसके कानों का स्पर्श

करते हुए विशाल नेत्र शोभा दे रहे हैं। जब यह हंसकर बोलती है, तब उसके वक्षस्थल पर शोभा के पुष्पों की वर्षा हो जाती है। उसके कपोलों पर लटकती हुई चंचल लटें क्रीड़ा कर रही है। उसके कंठ में मोतियों की दोलरी माला शोभा दे रही है। उसके अंग-प्रत्यंग से शोभा की तरंग उठती है, ऐसा प्रतीत होता है, मानों पृथ्वी पर अभी उसका रंग चू पड़ेगा।

(5)

लाजनि लपेटी चितवनि भेद-भाय भरी, लसति ललित लोल-चख-तिरछानि मैं।
छबि को सदन गोरो बदन, रुचिर भाल, रस निचुरत मीठी मृदु मुसक्यानि मैं।
दसन-दमन फैलि हिये मोतीमाल होति, पिय सों लड़कि प्रेम-पगी बतरानि मैं।
आनन्द की निधि जगमगति छबीली बाल, अंगनि अमंग-रंग ढुरि मुरि जानि मैं।।

शब्दार्थ- **लाजनि=** लज्जा से। **लपेटी=** लिपटी हुई, युक्त। **भेद-भायभरी=** मूढ़ भावों से पूर्ण, रहस्यमय भावों से पूर्ण। **लमति=** शोभित है। **ललित=** सुन्दर। **लोल=** मद भरे, मद के कारण लाल। **चख=** चक्षु, नेत्र। **तिरछानि=** तिरछे, कटीले। **छबि=** शोभा। **सदन=** घर। **बदन=** मुख। **रुचि=** सुन्दर। **भाल=** मस्तक, माथा। **निचुरत=** टपकता हो, टपक पड़ता हो। **मृदु=** कोमल, हलकी। **दसन-दमक=** दांतों की चमक। **फैलि हियें=** छाती पर फैलकर। **मोती माल होति=** मोती की माला सी लगती है। **लड़कि=** चपलता के साथ, हाव-भाव और विविध मुद्राओं के साथ, अदाएँ दिखाती हुई। **बतरानि=** बातचीत, वार्त्तालाप। **आनन्द की निधि=** आनन्द का समुद्र अत्यन्त आनन्द प्रदान करने वाली। **जगमगति=** जगमगाती है। **छबीली=** शोभाशाली। **बाल=** प्रेमिका, नवयौवना। **अंगनि=** अंग-प्रत्यंग में। **अमंग-रंग=** काम की शोभा अथवा काम-जन्य छटा, दवि। **ढुरि=** इधर-उधर होना, झूमना। **मुरि=** मुड़ना।

सन्दर्भ- प्रस्तुत कवित्त में कवि ने विलासवती कामिनी के बाह्य-सौन्दर्य, हाव-भाव, मुद्राओं, चेष्टाओं आदि का अत्यन्त कलात्मक और अद्‌भुत आकर्षण से पूर्ण चित्र उपस्थित किया है।

व्याख्या- उस नायिका के सुन्दर, (मद से) लाल और तिरछी नेत्रों में गूढ़ भावों से भरी हुई तथा लज्जा से युक्त चितवन सुशोभित है (अर्थात् संयोग की इच्छा को लेकर वह नायिका जब प्रियतम की ओर देखती है तो उसके नेत्रों के मद की लाली के साथ-साथ लज्जा और अप्रकट काम-भावना झलकने लगती है। हृदयान्तर्गत काम-भावना के कारण एक ओर तो उसके सुन्दर नेत्र तिर्यक् हो जाते हैं और मद की लाली से भर उठते हैं और दूसरी ओर लज्जा के कारण वह खुलकर प्रियतम की ओर देख नहीं पाती।) उसका गौरवर्ण का मुख अनन्त (शोभा का घर) है, उसका मस्तक सुन्दर है तथा उसकी मन्द-मन्द मधुर मुस्कान से रस टपका पड़ता है (अर्थात् उसकी हल्की-हल्की मीठी मुस्कान रस से लबालब भरी हुई है और ऐसा-प्रतीत होता है। मानों उससे रस छलका पड़ रहा हो।) वह जब हाव-भाव और चपलता (लड़का) के साथ अपने प्रियतम से प्रेम से भरी हुई बातचीत करती है, तब उसके दाँतों की चमक उसकी छाती पर फैलकर मोतीयों की माला-सी प्रतीत होती है। उसके

इधर-उधर होने (झूमने) और मुड़ने में उसके अंग-प्रत्यंग से जो कामजन्य छटा उत्पन्न होती है, उससे वह अनन्त आनन्दमयी और शोभाशाली प्रेमिका जगमगाने लगती है अर्थात् अंगों को इधर-उधर संचालित करने और मोड़ने में उसके अंगों में कामोद्दीप्त करने वाली शोभा आ जाती है जो केवल कामोद्दीप्त ही नहीं करती वरन् स्वयं नायिका के हृदय की काम-भावना को भी प्रकट करती है- नायिका का यह रूप आनन्द देने वाला और अद्‌भुत आकर्षण से पूर्ण होता है।

विशेष- रति-कामना-सूचक हाव-भाव, मुद्राओं और चेष्टाओं का बड़ा ही सजीव तथा चित्रात्मंक वर्णन इन पंक्तियों में हुआ है, जो कवि के निरीक्षण कौशल का तो परिचायक है ही, उसके हृदय की तन्मयता पर भी प्रकाश डालने वाले हैं, वे डूबकर निखना। जो अक्सर 'हमने इसे डूबकर लिखा है'- कहते पाये जाते हैं, वे डूबकर लिखना क्या जानें।